"ईरान में विशेषज्ञ सभा के अध्यक्ष का चुनाव"

डॉ. आसिफ शुजा*

10 मार्च, 2015 को अयातुल्लाह मोहम्मद याज़दी ईरान की विशेषज्ञ सभा के नए अध्यक्ष चुने गए, जो एक अत्यंत महत्वपूर्ण संवैधानिक निकाय है, जिसमें 86 वरिष्ठ मौलवी हैं और जो ईरान के सर्वाच्च नेता के चयन के लिए जिम्मेदार है। यह चुनाव पूर्व सभा अध्यक्ष अयातुल्लाह मोहम्मद-रेज़ा माहदावी कानी की मौत के कारण आयोजित किया गया, जिनकी 21 अक्तूबर, 2014 को लंबी बीमारी के बाद 83 वर्ष की आयु में मौत हो गई थी। कानी मार्च, 2011 से ही विशेषज्ञ सभा के अध्यक्ष थे; उन्होंने अयातुल्लाह रफ़संजानी का स्थान लिया था।

अयातुल्लाह याज़दी का चुना जाना आश्चर्यजनक है क्योंकि उनकी उम्मीदवारी पर ईरानी राजनीति में बहुत अधिक चर्चा नहीं हुई। इस बात का पूरा अनुमान था कि सभा के कार्यकारी अध्यक्ष अयातुल्लाह मेहमूद शाहरौदी इस पद पर बने रहेंगे। तथापि, चुनाव से ठीक पहले अयातुल्लाह शाहरौदी ने अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली जिससे अयातुल्लाह याज़दी और अयातुल्लाह रफ़संजानी के बीच सीधा मुकाबला रह गया। अयातुल्लाह याज़दी के चुनाव ने न केवल अयातुल्लाह रफ़संजानी की अभिलाषाओं को घटा दिया, बल्कि इसे अयातुल्लाह रफ़संजानी के प्रतिनिधित्व वाले ईरान की अपेक्षाकृत सुधारवादी गुट की स्पष्ट हार के रूप में देखा जाता है।

वास्तव में, अयातुल्लाह रफ़संजानी ने प्रारंभ में विशेषज्ञ सभा के चुनाव के प्रति अपनी अनिच्छा जाहिर की थी। उन्होंने तर्क दिया था कि विशेषज्ञ परिषद के अध्यक्ष के रूप में उनकी जिम्मेदारियों के कारण अतिरिक्त जिम्मेदारियां (उठाने) के लिए उनके पास समय नहीं बचता। तथापि, उन्होंने यह भी संकेत दिया था कि वे चुनाव लड़ेंगे यदि वे (चुनाव लड़ रहे) उम्मीदवारों को पद के योग्य नहीं पाएंगे। परिणामस्वरूप, यह चुनाव अयातुल्लाह मोहम्मद याज़दी, जिन्होंने वर्ष 1989 और 1999 के दौरान ईरान की न्यायपालिका में सेवाएं दी थी तथा जो वर्तमान में निगरानी परिषद के सदस्य हैं, और अयातुल्लाह अकबर हाशमी रफ़संजानी, जो ईरान के विशेषज्ञ परिषद के वर्तमान अध्यक्ष हैं, के बीच कड़े संघर्ष में बदल गया। इस चुनाव में अयातुल्लाह याज़दी को 73 मतों में से 47 मत मिले जबकि अयातुल्लाह रफ़संजानी को 24 मत मिले।

निगरानी परिषद के अनेक सदस्यों की ही तरह, अयातुल्लाह याज़दी को भी क टरपंथी माना जाता है। निगरानी परिषद यकीनन ईरानी राजनीतिक व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण रूढ़ीवादी निकाय है, जो ईरान के संसद तथा राष्ट्रपति के चुनावों के दौरान उम्मीदवारों के पुनरीक्षण के लिए जिम्मेदार होता है। यह निकाय इन चुनावों का पर्यवेक्षण भी करता है और ईरानी संसद द्वारा पारित विधेयकों की जांच (भी) यह देखने के लिए करता है कि वे इस्लामी सिद्धातों के अनुरूप हैं या नहीं।

दूसरी ओर, अयातुल्लाह रफ़संजानी अपेक्षाकृत उदारवादी हैं। वे पूर्व में विशेषज्ञ सभा के अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं। हालांकि, हाल के वर्षों में, ऐसा प्रतीत होता है कि, उन्हें रूढ़ीवादियों का समर्थन मिलना बंद हो गया है, जैसा कि वर्ष 2013 में हो चुके राष्ट्रपति चुनावों के दौरान संकेत मिले थे, जब उन्हें निगरानी परिषद द्वारा चुनाव लड़ने से अयोग्य घोषित कर दिया गया था।

विशेषज्ञ सभा के सदस्य आठ वर्षों के लिए ईरानी मतदाताओं द्वारा सीधे चुने जाते हैं। इस निकाय को इस्लामी गणतंत्र के सर्वोच्च नेता का चयन करने और उनके कार्यकलापों पर निगरानी रखने का कार्यभार दिया जाता है और इन्हें सर्वोच्च नेता को बर्खास्त कर देने का अधिकार भी होता है, यदि वे इस्लामी सिद्धांतों के अनुरूप व्यवहार नहीं करते अथवा अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करते। हालांकि, इस्लामी गणतंत्र के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ है और इस निकाय ने केवल एक बार वर्ष 1989 में ईरान के पहले सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह खुमैनी की मौत के बाद सर्वोच्च नेता का चयन किया था।

हालांकि, यह सदन इस्लामी गणतंत्र के रोजमर्रा के कार्यों में दखलंदाजी नहीं करता, तथापि, नए सर्वोच्च नेता के चयन की अपनी जिम्मेदारी के कारण यह ईरान में अत्यंत शक्तिशाली सांवैधानिक संस्था है।

वर्ष 1985 में, विशेषज्ञों के इस सभा ने अयातुल्लाह मोन्ताज़ेरी को प्रथम सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह खुमैनी के उत्तराधिकारी के रूप में चुना था। मगर दोनों नेताओं के बीच विभिन्न मुद्दों पर गंभीर मतभेद पैदा हो गए जिससे कारण अयातुल्लाह खुमैनी ने वर्ष 1989 में अयातुल्लाह मोन्तज़ेरी को उनके नामांकित पद से बर्खास्त कर दिया। अयातुल्लाह मोन्तज़ेरी की बर्खास्तगी के बाद से सर्वोच्च नेता के जीवनकाल में ही उनके उत्तराधिकारी के बारे में चर्चा करना ईरान में वर्जित कर दिया गया है। फिर भी, ईरानी राजनीतिक व्यवस्था के शासक उच्चवर्ग के बीच इस पद के लिए आंतरिक प्रतिस्पर्धा को पूरी तरह से नकारा नहीं जा सकता।

अयातुल्लाह याज़दी 84 साल के हो चुके हैं और वे फरवरी 2016 तक विशेषज्ञ सभा के अध्यक्ष बने रहेंगे, जब सदन के 86 सदस्यों के लिए होनेवाला चुनाव ईरानी संसदीय चुनावों के साथ-साथ ही होगा। ईरान के विशेषज्ञ सभा के अध्यक्ष का चुनाव दो कारणों से महत्वपूर्ण है। अयातुल्लाह याज़दी इस महत्वपूर्ण पद पर एक ऐसे समय में चुने गए हैं जब ईरान परमाणु वार्ता एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। दूसरे, इस चुनाव का महत्व इस तथ्य में भी निहित है कि यह एक ऐसे समय में आया है, जब वर्तमान सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह खुमैनी, जिनकी हाल ही में प्रोस्टेट सर्जरी हुई है, के स्वास्थ्य को लेकर अटकलबाजियों का बाजार गर्म है। इस परिदृश्य में, एक कट्टरपंथी अयातुल्लाह याज़दी का चुना जाना ईरान में नए नेतृत्व के संभावित चेहरे का संकेतक हो सकता है।

***

डॉ. आसिफ शुजा विश्व मामलों की भारतीय परिषद, नई दिल्ली में अनुसंधान अध्येता हैं।